

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मसीह का उद्धार कार्य, सत्र 5, परिचय, भाग 5, सिद्धांत और क्राइस्टोलॉजी का इतिहास

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन मसीह के उद्धार कार्य पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 5, परिचय, भाग 5, सिद्धांत और क्राइस्टोलॉजी का इतिहास है।

आपका स्वागत है क्योंकि हम प्रायश्चित के सिद्धांत के इतिहास पर अपने व्याख्यान जारी रखते हैं।

हमने पश्चिम में प्रारंभिक चर्च के बारे में सोचा है और कहा है कि शैतान को फिरौती देने का दृष्टिकोण प्रबल था। पूर्व में, देवत्व का प्रभुत्व था, हालाँकि पूर्व और पश्चिम दोनों में, आंकड़े उससे कहीं अधिक जटिल हैं। हमने मध्य युग में बहुत अलग विचारों वाले एंसलम और एबेलार्ड और फिर सुधार में लूथर और कैल्विन के बारे में बात की है।

हम सुधार के प्रति प्रतिक्रियाओं के लिए तैयार हैं और पहला है फॉस्टस सोसिनस, 1539-1604। मैं एंथनी थिसलटन की सिस्टमैटिक थियोलॉजी और एच. डरमोट मैकडोनाल्ड की मसीह की मृत्यु के प्रायश्चित पर लिखी गई पुस्तक, उनके मजबूत ऐतिहासिक खंड को श्रेय देना चाहता हूँ। सुधारकों द्वारा प्रायश्चित के बारे में इतनी दृढ़ता से बताए गए फोरेंसिक या कानूनी और दंडात्मक, यानी दंडात्मक दृष्टिकोण के खिलाफ एक तत्काल और जोरदार विरोध फॉस्टस सोसिनस द्वारा लिखित पुस्तक डे जेसु क्रिस्टो साल्वाटोरे के रूप में सामने आया, जो उद्धारकर्ता यीशु मसीह के बारे में है।

यह रचना एक सुधारवादी पादरी, कोवेटस को जवाब देने के लिए लिखी गई थी, और यह सिर्फ कैल्विन और लूथर के विश्वास का खंडन था। सोसिनस का पूरा प्रयास मसीह के ईश्वरत्व को नकारना था और इसलिए, उनकी मृत्यु का कोई प्रायश्चित मूल्य था। यदि आप सोच रहे हैं, तो हाँ, सोसिनियन और सोसिनियनवाद लेलियस और फॉस्टस सोसिनस, चाचा और भतीजे से आते हैं।

नाम लैटिनकृत थे, उनके इतालवी नाम लेलियो और फॉस्टो सोसिनी थे, लेकिन उन्हें हमेशा याद रखा जाएगा, यहाँ फॉस्टस सोसिनस के रूप में जाना जाता है। पाप के बारे में उनका दृष्टिकोण पेलीगियन था, यानी, आदम मानव जाति के लिए एक बुरा उदाहरण था, और बस इतना ही। मसीह के बारे में उनका दृष्टिकोण एरियन जैसा था, जिसने मसीह के ईश्वरत्व को नकार दिया, इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि प्रायश्चित के बारे में उनका दृष्टिकोण दोषपूर्ण है।

लेकिन यह दृष्टिकोण आज भी जारी है क्योंकि सोसिनियनवाद ने यूनिटेरियनवाद के साथ मिलकर यूयू का गठन किया, जिसे यूनिटेरियन यूनिवर्सलिस्ट चर्च कहा जाता है। यदि आप उनके

विचारों, उनकी मान्यताओं और कई अन्य पंथिक मान्यताओं की आलोचना करना चाहते हैं, तो टैलबोट थियोलॉजिकल सेमिनरी के मेरे मित्र एलन गोम्स ने विश्व धर्मों और पंथों पर जॉर्डरवन के लिए 14-15 खंडों का संपादन किया है, और एलन खुद, जो एक विशेषज्ञ हैं, ने यूनिटेरियन यूनिवर्सलिज्म पर खंड लिखा है। सोसिनस ने मसीह के उद्धारक कार्य को करने के तरीके को बताते हुए न्याय की पूरी तरह से अवहेलना की।

अगर हम इस न्याय से छुटकारा पा सकें, भले ही हमारे पास कोई और सबूत न हो, तो इस तरह मसीह की संतुष्टि की यह कल्पना पूरी तरह से उजागर हो जाएगी और गायब हो जाएगी। सुधारवादी कथनों की उनकी आलोचनात्मक अस्वीकृति में, संतुष्टि का विचार उनके आकलन में दया के विचार को बाहर करता है। पेलागियन फैशन में, सोसिनस ने पाप को एक व्यक्तिगत मामला घोषित किया।

इसे किसी दूसरे के खाते में नहीं डाला जा सकता। यह सच नहीं है कि आदम के पाप को मानव जाति पर आरोपित किया जाता है। ऐसा सोसिनस ने कहा।

बेशक, रोमियों 5:12-19 में पॉल इसके विपरीत सोचते हैं। सोकिनस ने कहा कि परमेश्वर ने अपनी दया के पूर्ण प्रदर्शन के लिए अपने न्याय को एक तरफ रख दिया है। पुनरुत्थान का तथ्य यह साबित करता है कि मसीह ने परोक्ष रूप से पीड़ा नहीं झेली और उसकी मृत्यु में कोई बचत मूल्य नहीं है।

यह क्रूस पर नहीं है, इस पर ध्यान दें, लेकिन स्वर्ग में वह बलिदान करता है। यह मेरे लिए आश्चर्यजनक है। बाइबल पढ़ते हुए, निश्चित रूप से किसी को यह विचार कभी नहीं आएगा कि मसीह ने नरक में प्रायश्चित्त किया, जैसा कि विश्वास के नाम की प्रशंसा करने वाले शिक्षक सिखाते हैं, या कि उसने स्वर्ग में प्रायश्चित्त किया जैसा कि सोसिनियनवाद सिखाता है।

हे भगवान। मसीह की पीड़ाएँ अनुशासनात्मक थीं, न्यायिक नहीं। संतुष्टि के इस विचार से ज़्यादा बेतुकी कोई बात नहीं हो सकती।

सोसिनस के दृष्टिकोण का आधार यह है कि ईश्वर में सब कुछ उसकी इच्छा के अधीन है। इसलिए, ईश्वर में कोई आवश्यक न्याय नहीं है, जो पाप की सज़ा की पूरी तरह से मांग करता हो। सोसिनस का हवाला देते हुए, ईश्वर में ऐसा कोई न्याय नहीं है जो पाप को पूरी तरह से और अनिवार्य रूप से दंडित करने की मांग करता हो और जिसे ईश्वर स्वयं अस्वीकार न कर सके।

जैसा कि ईश्वर का न्याय है, वैसा ही उसकी दया भी है। दोनों ही उसकी इच्छा के अधीन हैं। इसलिए, उसे अपनी इच्छा के अनुसार दंड देने या क्षमा करने का अधिकार है।

चूँकि परमेश्वर क्षमा करना चाहता है, इसलिए उसके न्याय की संतुष्टि की कोई आवश्यकता नहीं है। दूसरे शब्दों में, क्षमा लाने के लिए क्रूस की आवश्यकता नहीं है। आप सोच रहे होंगे कि मसीह का महत्व यह है कि वह क्षमा का आश्वासन देता है। वह इसे खरीदता नहीं है।

वह वास्तव में उद्धारकर्ता है क्योंकि वह हमें अनंत जीवन का मार्ग बताता है। सोकिनस के अनुसार, मसीह क्रूस पर उनके लिए प्रायश्चित्त करके पापों को दूर नहीं करता है, बल्कि इस तथ्य के कारण कि वह अपने सबसे व्यापक वादों के द्वारा लोगों को उस पश्चात्ताप का अभ्यास करने के लिए प्रेरित करने में सक्षम है जिससे उनके पाप मिट जाते हैं। सोकिनस के लिए, मसीह का उद्धारक महत्व परिणामस्वरूप उसकी मृत्यु से उसके स्वर्गीय जीवन में स्थानांतरित हो जाता है।

इसलिए, अंततः मसीह लोगों के उद्धार के मार्ग का उद्घोषक और सर्वोच्च उदाहरण है। वह सर्वश्रेष्ठ नैतिक शिक्षक है। हम आज बाद में देखेंगे, प्रभु की इच्छा से, यीशु के तीन कार्यों में से पहले में, वह सर्वश्रेष्ठ भविष्यवक्ता है, लेकिन वह एक पुजारी भी है जो अपनी मृत्यु में हमारे पापों का प्रायश्चित्त करता है।

सोकिनस के मसीह के व्यक्तित्व के बारे में गलत दृष्टिकोण के कारण, उनके ईश्वरत्व को नकारते हुए, इसलिए, उनके पास प्रायश्चित्त के बारे में एक दोषपूर्ण दृष्टिकोण है क्योंकि केवल ईश्वर ही बचा सकता है। सोकिनस के अनुसार, ईश्वर को संतुष्टि की आवश्यकता नहीं थी। मसीह ने प्रायश्चित्त नहीं किया।

हमें बस एक नए दिव्य विचार की आवश्यकता है जो हमें प्रबुद्ध करे, और यही वह है जो मसीह लाता है। मैं विधर्मी शब्द को स्वतंत्र रूप से इधर-उधर नहीं फेंकता, ठीक है। मेरे लिए, विधर्म केवल एक त्रुटि नहीं है।

त्रुटि की डिग्री का मेरा अपना चार्ट गलत राय से शुरू होता है, जो हम सभी के पास है, और यहां तक कि अलग-अलग गलतियाँ भी, जो हम सभी के पास हैं। लेकिन फिर यह व्यवस्थित त्रुटियों की ओर बढ़ता है। सुधारवादी धर्मशास्त्र या कैल्विनवाद के रूप में जानी जाने वाली धर्मशास्त्र की प्रणाली के अनुसार, हमारे आर्मिनियन भाई और बहन, ध्यान दें कि मैं उनके बारे में कैसे बोलता हूँ, व्यवस्थित त्रुटि के दोषी हैं।

आर्मिनियनवाद के नाम से जानी जाने वाली धर्मशास्त्र प्रणाली के अनुसार, उनके कैल्विनिस्ट भाई-बहन प्रणालीगत त्रुटि के दोषी हैं। यानी, उन दो विचार प्रणालियों में, सिद्धांत अन्य सिद्धांतों को प्रभावित करते हैं। इसलिए, किसी के दृष्टिकोण के आधार पर, एक प्रणालीगत सत्य या त्रुटि चल रही है।

तो, गलत राय, गलतियाँ, व्यवस्थागत गलतियाँ, और एक बड़ी दरार, और फिर विधर्म। क्योंकि विधर्म केवल एक व्यवस्थागत गलती नहीं है, विधर्म एक निंदनीय सिद्धांत है।

यह विश्वास करने की गलतियाँ हैं जो व्यक्ति को अनुग्रह और उद्धार से दूर कर देती हैं। आप कहते हैं, लेकिन मसीह के ईश्वरत्व को नकारना भी, जो एक भयानक बात है, यीशु को नहीं बदलता। नहीं, इससे यीशु को नहीं बदलता।

वह अभी भी ईश्वर-मनुष्य है जिसने पापों के लिए प्रायश्चित्त किया और तीसरे दिन फिर से जी उठा, चाहे सोकिनस या कोई और ऐसा कहे या न कहे। लेकिन मैं पापों की क्षमा और अनंत जीवन के लिए उस पर सही तरीके से विश्वास नहीं कर सकता अगर मैं उससे न केवल अपने निर्माता के

लिए एक प्राणी के रूप में बल्कि अपने ईश्वर के लिए एक पापी के रूप में भी संबंधित नहीं हूँ। यानी, उद्धार के लिए मसीह पर विश्वास करने का मतलब यह मानना है कि वह मेरे पापों को क्षमा करने और मुझे अनंत जीवन देने में सक्षम है।

और इसका मतलब है कि कम से कम परोक्ष रूप से अपने देवता को स्वीकार करना। क्या अपने देवता को स्पष्ट रूप से स्वीकार करना बेहतर नहीं है? हाँ, लेकिन यह अपने देवता को स्पष्ट रूप से नकारना है जो व्यक्ति को अनुग्रह से वंचित करता है। एक व्यक्ति कुछ भी नहीं जान सकता है, और मैं दुनिया के दूर-दराज के क्षेत्रों का उपयोग किसी ऐसे व्यक्ति के लिए करता था जो कुछ भी नहीं जानता है, लेकिन अब यह अच्छे पुराने अमेरिका में हो सकता है, कोई ऐसा व्यक्ति जो ईश्वर या बाइबिल के बारे में कुछ भी नहीं जानता है।

और अगर वे सीखते हैं कि वे पापी हैं और उन्हें ईश्वर की कृपा की आवश्यकता है, कि यीशु पापियों को बचाने के लिए मरे और फिर से जी उठे, और अगर वे ईश्वर के साथ उन्हें सही करने के लिए केवल मसीह पर भरोसा करते हैं, तो वे ईश्वर को जान सकते हैं और क्षमा पा सकते हैं। मैं जो कहने की कोशिश कर रहा हूँ वह यह है कि यीशु के ईश्वरत्व की एक अंतर्निहित स्वीकृति है कि मैं उस पर भरोसा कर रहा हूँ कि वह मुझे क्षमा करने में सक्षम है। शायद यह व्यक्ति बाद में स्पष्ट रूप से सीखेगा कि ईश्वर का पुत्र अवतार से पहले अस्तित्व में था, कि वह अपने अवतार में हम में से एक बन गया, और वह एक व्यक्ति में ईश्वर और मनुष्य दोनों है।

लेकिन, मैं फिर से कहूँगा: अपने ईश्वरत्व को पूरी तरह से नकारना व्यक्ति को अनुग्रह से वंचित कर देता है। यह पंथों की विधर्मिता या निंदनीय त्रुटि है। क्या कोई व्यक्ति पंथ में रहते हुए भी आस्तिक हो सकता है? इसका उत्तर हाँ है, यदि वे पंथ की शिक्षाओं के विपरीत किसी चीज़ पर विश्वास करते हैं और उस झूठी शिक्षा के बावजूद मसीह पर भरोसा करते हैं।

हमारे अगले पोस्ट-रिफॉर्मेशन ऐतिहासिक धर्मशास्त्री ह्यूगो ग्रोटियस ध्यान देने योग्य हैं। इसका सही उच्चारण ग्रोटियस भी है, जिससे हमें प्रायश्चित के बारे में सरकारी दृष्टिकोण मिलता है, या उनके नाम का उपयोग करते हुए, प्रायश्चित के बारे में ग्रोटियन दृष्टिकोण मिलता है। और मुझे याद दिलाइए कि जब यह कहानी खत्म हो जाए तो आपको एक मजेदार कहानी सुनाना है।

वह विधर्मी नहीं है, वह विधर्मी नहीं है, लेकिन उसने कुछ महत्वपूर्ण गलतियाँ कीं। वह बहुत ही बुद्धिमान व्यक्ति था। ग्रोटियस ने सुधारवादी सिद्धांत के रक्षकों के बीच एक तत्काल स्थान प्राप्त किया; लूथर और केल्विन दोनों उस तरह से सुधारवादी हैं और उनके विचार, सोसिनस के दोषपूर्ण विचार हैं।

वह शुरू करते हैं, ग्रोटियस बुनियादी सुधार के तर्क को कायम रखते हुए शुरू करते हैं कि ईश्वर को दया दिखाने के लिए संतुष्टि आवश्यक है। ग्रोटियस ने सोसिनस का खंडन करने के अपने इरादे की घोषणा की। हालाँकि, ग्रोटियस सोसिनस के साथ स्वीकार करते हैं कि न्याय ईश्वरीय प्रकृति की अंतर्निहित आवश्यकता नहीं है।

उद्धारण, यह ईश्वर या ईश्वरीय इच्छा और प्रकृति में कुछ भी नहीं है, बल्कि केवल उसकी इच्छा का प्रभाव है। यह एक त्रुटि है। ईश्वर पवित्र, न्यायप्रिय, विश्वासयोग्य, सत्यनिष्ठ, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान, इत्यादि है।

वह न्यायप्रिय है, वह पवित्र है। ईश्वर ने वास्तव में कानून की घोषणा की है, लेकिन वह अभी भी उससे ऊपर है और इसलिए, उस पर उसका अधिकार है। यह सोसिनस की तरह कानून की पूरी तरह से अवहेलना नहीं है।

यह कानून का हेरफेर है, कानून की माँगों को कम करना है। परिणामस्वरूप, गोटियस मोक्ष के मामले में ईश्वर को न्यायाधीश के रूप में नहीं, बल्कि शासक के रूप में देखता है, इसलिए इसका नाम सरकारी सिद्धांत है, क्योंकि गोटियस के लिए अंत में मसीह की मृत्यु ईश्वर की नैतिक सरकार के सर्वोत्तम हित में है। यह जटिल है, और वह बाइबिल की भाषा का इस हद तक उपयोग करता है कि कई लोग पहली बार में उसके घने लेखन को पढ़कर मूर्ख बन जाएंगे।

ईश्वर के साथ यह रिश्ता, ईश्वर का मानव जाति के साथ, शासितों पर शासक के रूप में, जैसा कि मैंने कहा, प्रायश्चित्त का सरकारी दृष्टिकोण शीर्षक को जन्म देता है। ईश्वर वह न्यायाधीश नहीं है जो मसीह को उस दंड से दंडित करता है जिसके पापी हकदार हैं। बल्कि वह शासक है जो अपने कानून को निरस्त कर सकता है या बदल सकता है।

वह इसे निरस्त नहीं करता, बल्कि अपनी महिमा और लोगों के उद्धार के सराहनीय कारणों से कानून में बदलाव करता है। इस प्रकार ईश्वर ने कानून को शिथिल कर दिया है। उसने इसे कम कर दिया है, गोटियस को उद्धृत करते हुए, सभी सकारात्मक कानून शिथिल किए जा सकते हैं।

शिथिल कानून के इस संबंध के संदर्भ में, गोटियस ने दंड के बारे में अपना दृष्टिकोण विकसित किया। मसीह की सजा ईश्वर की सरकार के हित में आवश्यक थी। उद्धारण, यह देखा जाना चाहिए कि दंड के लिए यह आवश्यक है कि इसे पाप के लिए लगाया जाए, लेकिन आमतौर पर यह आवश्यक नहीं है कि इसे पापी पर ही लगाया जाए।

गोटियस फिर मसीह के कार्य को शिथिल कानून की आवश्यकताओं के लिए संतुष्टि के बलिदान के रूप में प्रस्तुत करता है। हमारे लिए इसका पालन करना भी कठिन है, है न? यह है। वह मसीह के कष्टों के दंडात्मक सिद्धांत की सोसिनियस की आलोचना को पाप के दैवीय दंड के सटीक समकक्ष के रूप में स्वीकार करता है।

हालाँकि, चूँकि कानून में ढील दी गई है या उसे कम किया गया है, इसलिए यह विचार कि सज़ा का उल्लंघन के अनुरूप होना ज़रूरी नहीं है। जब तक कानून के प्रति श्रद्धा नहीं होगी, तब तक ईश्वर की सरकार कायम नहीं रह सकती। इसलिए मसीह की मृत्यु कानून के प्रति इस सम्मान और इसे तोड़ने के जघन्य अपराध का एक संकेत है।

गोटियस ने लिखा, इसमें कुछ भी अन्याय नहीं है, कि ईश्वर, जिसकी इच्छा का उपयोग करने के लिए सभी मामलों में सर्वोच्च प्राधिकारी है, वह सर्वोच्च है, क्षमा करें, सभी मामलों में प्राधिकारी,

अपने आप में अन्यायी नहीं है, और स्वयं किसी कानून के अधीन नहीं है, उसने मसीह की पीड़ा और मृत्यु का उपयोग हम सभी के अपार अपराध के विरुद्ध एक भारी उदाहरण स्थापित करने के लिए किया, जिनके साथ मसीह प्रकृति, संप्रभुता, सुरक्षा द्वारा सबसे अधिक निकटता से जुड़ा हुआ था, उद्धरण बंद करें। हालाँकि, मसीह ने पापों के लिए सटीक दंड नहीं उठाया, लेकिन दंड के विकल्प को उद्धृत करते हुए, इस पर ध्यान दें। मसीह की पीड़ा और मृत्यु ने ईश्वर के कानून की आवश्यकताओं को पूरा किया क्योंकि ईश्वर ने उन्हें मनुष्यों की खातिर शिथिल कर दिया था।

यह दंडात्मक प्रतिस्थापन नहीं है। विडंबना यह है कि यह दंडात्मक प्रतिस्थापन का विकल्प है। इसके बजाय यीशु दंडात्मक उदाहरण बन जाता है।

ईश्वर वह न्यायाधीश नहीं है जिसने अपने बेटे को उस निर्णय से दंडित किया जिसके पापी हकदार हैं। ईश्वर नैतिक शासक है जिसने बेटे को उस दंड के उदाहरण के रूप में दंडित किया जिसके पाप हकदार हैं। यह कोई विधर्म नहीं है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है, यह दंड प्रतिस्थापन की भाषा में दंड प्रतिस्थापन का स्पष्ट परिहार है।

मैं आपको एक मज़ेदार कहानी सुनाता हूँ। जिस व्यक्ति ने मुझे व्यवस्थित धर्मशास्त्र सिखाया, उसने पिछले वर्षों में बाइबल प्रेस्बिटेरियन चर्च के लिए कई लोगों को प्रशिक्षित किया। रॉबर्ट जे. डनज़वीलर नामक इस अद्भुत शिक्षक के अधीन एक युवा और स्नातक अपने प्रेस्बिटेरी में समन्वय के लिए आया था, और अपने धर्मशास्त्र की परीक्षा में, उसने एक अपवाद के साथ शानदार काम किया।

उन्होंने प्रायश्चित के बारे में ग्रीटियन या सरकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने सरकारी आई पर बिंदु और टी पर क्रॉस लगाया, और समिति ने कहा, युवक, आपकी परीक्षा एक विशेष बात को छोड़कर अच्छी है। आपने प्रायश्चित के बारे में एक दोषपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है, और युवक हैरान रह गया।

उन्होंने पूछा, "तुम्हारा गुरु कौन है? रॉबर्ट डनज़वीलर। ओह, वह ईश्वर का एक अद्भुत आदमी है। उसने हममें से कई लोगों को प्रशिक्षित किया है।"

मैं इसे समझ नहीं पा रहा हूँ। यह उनके नोट्स में ही है। मैं इसे अपने दिमाग में किसी पेज के ऊपर चित्रित कर सकता हूँ।

खैर, नौजवान, हम दोपहर के भोजन के लिए ब्रेक लेने जा रहे हैं। तुम दोपहर के भोजन के बाद वापस आओ और हमें वे नोट्स दिखाओ, और उसने ऐसा ही किया, और वह बिल्कुल सही था। पृष्ठ के शीर्ष पर, इसने प्रायश्चित के बारे में सरकारी दृष्टिकोण कहा, और पिछले पृष्ठ के निचले भाग में, इसने प्रायश्चित के बारे में गलत दृष्टिकोण कहा।

यह एक सच्ची कहानी है। हम आधुनिक धर्मशास्त्र के पिता के साथ अधिक आधुनिक काल में आगे बढ़ते हैं जो अभी भी प्रायश्चित के सिद्धांत के इतिहास का अनुसरण कर रहे हैं। आप संतों, जो इसे सुन रहे हैं और देख रहे हैं, आपकी दृढ़ता के लिए धन्यवाद।

फ्रेडरिक श्लेयरमाकर को आधुनिक धर्मशास्त्र का जनक कहा जाता है। एक और प्रतिभाशाली व्यक्ति। उनका समय 1768 से 1834 तक है।

कई उदार धर्मशास्त्रियों की तरह, उन्होंने अपनी युवावस्था में एक धर्मगुरु के रूप में प्रायश्चित के रूढ़िवादी दृष्टिकोण को स्वीकार किया था। बाद में, उन्होंने रूढ़िवादी विश्वास की उदार व्याख्या को कांट और रोमांटिकवाद की सराहना के साथ जोड़ा। उन्होंने मसीह के व्यक्तित्व और कार्य को एक साथ रखने की कोशिश की।

उन्होंने लिखा, उद्धारण कि उद्धारक की अनोखी और अनन्य गतिविधि एक दूसरे को दर्शाती है, और हम विश्वासियों की आत्म-चेतना में अविभाज्य रूप से एक हैं। यह धर्म में भावना पर जोर देने की उनकी धारणा का संकेत है, और वास्तव में, विश्वासियों की चेतना लगभग बाइबिल के सिद्धांत के भीतर उनका सिद्धांत बन जाती है। श्लेयरमेकर ने लिखा, उद्धारण, तब उद्धारक मानव प्रकृति की पहचान के आधार पर सभी मनुष्यों की तरह है, लेकिन उनकी ईश्वर-चेतना की निरंतर शक्ति द्वारा उन सभी से अलग है, जो उनके भीतर ईश्वर का एक वास्तविक अस्तित्व था।

यह श्लेयरमेकर की कुंजी है, विश्वासियों के भीतर ईश्वर-चेतना। सामान्य तौर पर, श्लेयरमेकर ने प्रतिस्थापन और प्रायश्चित की धारणाओं को खारिज कर दिया और प्रायश्चित के बारे में एक अनुकरणीय या नैतिक प्रभाव वाला दृष्टिकोण रखा, मोटे तौर पर एबेलार्ड का अनुसरण करते हुए। श्लेयरमेकर के लिए मसीह की पीड़ा, उद्धारण, एक बिल्कुल आत्म-त्याग करने वाला प्रेम था।

एक और उदार धर्मशास्त्री और हाल ही में अल्ब्रेक्ट रिट्सच, RITSCHL, 1822 से 1889 तक हैं। रिट्सच को पारंपरिक रूप से 19वीं सदी के एक विशिष्ट उदार धर्मशास्त्री के रूप में माना जाता है। फिर से, एक प्रतिभाशाली व्यक्ति और बहुत प्रभावशाली।

रिट्सल श्लेयरमेकर की तुलना में बाइबिल की सामग्री का अधिक बारीकी से अध्ययन करते हैं, लेकिन अंत में, वे प्रायश्चित का ऐसा विवरण प्रस्तुत करते हैं जो शायद एबेलार्ड के साथ एंसेलम की तुलना में अधिक समान है, अर्थात्, यह वस्तुनिष्ठ से अधिक व्यक्तिपरक है, और मैं उन अवधारणाओं की समीक्षा करूंगा। प्रायश्चित के एक वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से पता चलता है कि मसीह ने कुछ पूरा किया, हमारे बाहर की चीजें, और हमें बचाए जाने के लिए उस पर और उसने जो किया उस पर विश्वास करने की आवश्यकता है। प्रायश्चित के एक व्यक्तिपरक दृष्टिकोण से पता चलता है कि उसने जो किया, उसने हमें अंदर से प्रेरित करने के लिए कार्य किया, इसलिए उसका प्रभाव एक नैतिक उदाहरण या नैतिक प्रभाव है।

सच तो यह है कि प्रायश्चित के बारे में हमारा दृष्टिकोण हमारे बाहर से एक वस्तुनिष्ठ समझ के साथ शुरू होना चाहिए, लेकिन अगर हमें बचाना है तो इसे निश्चित रूप से आंतरिक समझ की ओर बढ़ना चाहिए, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बाहरी है, और यही वह है जिससे हम वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से शुरू करते हैं। फिर हम वास्तव में व्यक्तिगत रूप से मसीह पर प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करके व्यक्तिपरक की ओर बढ़ते हैं, उस पर भरोसा करते हैं जो हमें बचाने के लिए मर गया और फिर से जी उठा। अनुष्ठान मसीह के व्यक्तित्व और कार्य की परस्पर संबद्धता पर

जोर देने का प्रयास करता है, मुख्य रूप से नैतिक शब्दों में परमेश्वर के राज्य की स्थापना को देखता है, लेकिन मुख्य रूप से भविष्यद्वक्ता, पुजारी और राजा के रूप में उनके कार्य के माध्यम से।

इस तीन गुना बुलाहट में उसे कष्ट सहना पड़ता है, लेकिन मसीह, अनुष्ठान के अनुसार, प्रतिनिधि दंड का वाहक नहीं है। वह एक पुजारी के रूप में राज्य के समुदाय का प्रतिनिधित्व करता है, और नबी और राजा के रूप में, वह ईश्वर के अनुकरणीय प्रेम को व्यक्त करता है। मैं एक भजन याद करने की कोशिश कर रहा हूँ, और यह मेरे दिमाग में आता-जाता रहता है।

आह, जब मैं अद्भुत क्रॉस का निरीक्षण करता हूँ। हम इस भजन का लाभप्रद रूप से उपयोग करते हैं क्योंकि हम भजन में मसीह के कार्य की वस्तुनिष्ठ समझ लाते हैं, लेकिन भजन काफी हद तक व्यक्तिपरक है। देखिए मेरा क्या मतलब है।

जब मैं उस अद्भुत क्रॉस को देखता हूँ जिस पर महिमा के राजकुमार की मृत्यु हुई, तो मैं अपने सबसे बड़े लाभ को अपने सारे गर्व पर हानि और घटिया अवमानना मानता हूँ। क्या यह अच्छा है? हाँ, लेकिन यह मानता है कि मेरे बाहर, यीशु ने मुझसे प्रेम किया और मेरे लिए खुद को दे दिया। समझे? यह जो कर रहा है, वह एक ध्यान है।

यह एक व्यक्तिपरक ध्यान है जो एक वस्तुनिष्ठ क्रॉस और पुनरुत्थान को मानता है। हे प्रभु, मुझे ऐसा न करने दो कि मैं अपने परमेश्वर मसीह की मृत्यु के अलावा किसी और बात पर घमंड करूँ। वे सभी व्यर्थ चीज़ें जो मुझे सबसे ज़्यादा आकर्षित करती हैं, मैं उन्हें उसके खून में बलिदान कर देता हूँ।

उसके सिर, हाथ, पैर से देखो, दुख और प्रेम एक साथ बह रहे हैं। क्या कभी ऐसा प्रेम और दुख मिले थे, या काँटों ने मिलकर इतना समृद्ध मुकुट बनाया था? क्या प्रकृति का वह पूरा क्षेत्र मेरा था, जो उपहार के रूप में बहुत छोटा था? इतना अद्भुत, इतना दिव्य प्रेम, मेरी आत्मा, मेरा जीवन, मेरा सब कुछ माँगता है। यह एक व्यक्तिपरक भजन है और एक सुंदर भजन है क्योंकि परमेश्वर के लोग इसमें यह ज्ञान लाते हैं कि यीशु हमारे बाहर मरे और जी उठे।

तो, क्या हमें ऐसे भजनों की ज़रूरत है? हाँ, हमें ज़रूरत है। हमें चाहिए कि प्रायश्चित्त हमें व्यक्तिपरक रूप से प्रभावित करे, लेकिन यह उदारवाद द्वारा प्रस्तुत प्रायश्चित्त के विशुद्ध या मुख्य रूप से व्यक्तिपरक दृष्टिकोण से अलग है क्योंकि यीशु वास्तव में एक उद्धारकर्ता नहीं बल्कि एक उदाहरण है। और मैं फिर से यही कहूँगा।

नया नियम यीशु को एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करता है, लेकिन मार्टिन लूथर ने इसे अच्छी तरह से कहा। यीशु हमारा उदाहरण है, उन्होंने लिखा, लेकिन सबसे पहले नहीं। सबसे पहले, वह भगवान का उपहार है, गेबे, जो उसने हमें दिया है।

और फिर दूसरी बात, वह हमारा उदाहरण है, हमारा उदाहरण जिसका हमें अनुसरण करना चाहिए। एक बार जब हम उसे ईश्वर के उपहार के रूप में मानते हैं और उसे प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं, तो हाँ, हम उसके लिए जीने के लिए उसके उदाहरण का

अनुसरण करते हैं, लेकिन हम ईसाई बनने के लिए उसके उदाहरण का अनुसरण नहीं करते हैं। हम ईसाई बनने का विश्वास करते हैं क्योंकि विश्वास सुनने और मसीह के बारे में वचन सुनने से आता है।

गुस्ताफ औलेन, मैंने कई बार उनका और उनकी प्रसिद्ध पुस्तक क्राइस्टस विक्टर का उल्लेख किया। 1879 से औलेन 1977 तक जीवित रहे। इस प्रसिद्ध स्वीडिश धर्मशास्त्री ने क्लासिक कृति क्राइस्टस विक्टर लिखी।

क्लासिक शब्द का इस्तेमाल हर जगह किया जाता है, लेकिन क्राइस्टस विक्टर, यह किताब वास्तव में एक धार्मिक क्लासिक है। उन्होंने इसका उपशीर्षक दिया, प्रायश्चित के विचार के तीन मुख्य प्रकारों का एक ऐतिहासिक अध्ययन। एक ऐतिहासिक अध्ययन, इसलिए यह बाइबिल का काम नहीं है, यह ऐतिहासिक धर्मशास्त्र का काम है, प्रायश्चित के विचार के तीन मुख्य प्रकारों का।

वह वस्तुनिष्ठ या रूढ़िवादी दृष्टिकोण बनाम व्यक्तिपरक या उदारवादी दृष्टिकोण की पुरानी बहस से हटकर एक तीसरा दृष्टिकोण प्रस्तुत करना चाहते थे, जो इसे, मसीह के प्रायश्चित को, बुरी ताकतों पर मसीह की जीत के रूप में, या प्रायश्चित को, औलेन के हवाले से, एक दिव्य संघर्ष और जीत के रूप में मानता था। औलेन ने इसे न्यू टेस्टामेंट और चर्च के पिताओं का क्लासिक और नाटकीय दृष्टिकोण कहा। क्या वह सही है? कुछ हद तक, वह सही है।

औलेन ने खास तौर पर इरेनियस से अपील की। उसने घोषणा की थी कि मसीह आया था, उद्धारण, ताकि वह पाप को नष्ट कर सके, मृत्यु पर विजय पा सके, और मनुष्यों को जीवन दे सके। इरेनियस विधर्म के खिलाफ है।

औलेन ने मुख्य मुद्दे को न्याय के किसी भी उल्लंघन के रूप में नहीं माना, जो कि दंडात्मक प्रतिस्थापन है, बल्कि क्रॉस पर, उद्धारण, अत्याचारियों पर विजय प्राप्त करना है जो मनुष्य को बंधन में रखते हैं। औलेन ने अधिकांश पिताओं से अपील की, जिनमें ओरिजन, अथानासियस, कैप्पाडोसियन, क्राइसोस्टोम, एम्ब्रोस, ऑगस्टीन और लियो शामिल हैं, उन्होंने नए नियम के उन सभी अंशों से भी अपील की, जिनमें फिरौती या बुरी शक्ति का उल्लेख है। उदाहरण के लिए, मार्क 10.45, प्रसिद्ध फिरौती कथन, 1 कुरिन्थियों 2 :6, कुलुस्सियों 2:15। उनका सबसे विवादास्पद तर्क यह है कि लूथर क्लासिक प्रकार पर लौटता है।

खैर, लूथर ने क्राइस्टस विक्टर को पढ़ाया था। यह फिर से है। यह पुस्तक इतनी प्रभावशाली है कि इस पुस्तक का नाम ईसाई धर्मशास्त्र में एक तकनीकी शब्द बन गया है, जिसका उपयोग हर कोई करता है।

इसे प्रायश्चित के बारे में क्राइस्टस विक्टर का दृष्टिकोण कहा जाता है, और यह सही है, और वह सही था। इसके अलावा, उदारवादियों ने अपने व्यक्तिपरक विचारों के साथ इस पर जोर नहीं दिया। रूढ़िवादी लोगों ने अपने वस्तुनिष्ठ दंडात्मक प्रतिस्थापन के साथ इस पर जोर नहीं दिया, लेकिन लूथर का इसे एकमात्र दृष्टिकोण बनाना गलत है।

नहीं। जैसा कि मैंने कल कहा था, पॉल आउटहाउस ने अपनी प्रभावशाली पुस्तक, द थियोलॉजी ऑफ़ मार्टिन लूथर में कहा है कि लूथर के दो मुख्य विचार समान रूप से थे, दंडात्मक प्रतिस्थापन और क्राइस्टस विक्टर, और यह सच है। लूथरन परंपरा में होने के कारण, किसी कारण से, ऑलेन ने कैल्विन को पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर दिया, और यह सच है कि कैल्विन में दंडात्मक प्रतिस्थापन का दृष्टिकोण प्रमुख था, लेकिन कैल्विन ने क्राइस्टस विक्टर की शिक्षा दी।

वास्तव में, मैंने इसे इसी तरह सीखा। कैल्विन ने मुझे बाइबल की ओर इशारा किया, और आप बाद में देखेंगे, जब हम प्रायश्चित के चित्रों पर पहुँचते हैं, तो क्राइस्टस विक्टर हर जगह दिखाई देता है। मैंने पहले ही कहा था कि यह उत्पत्ति 3.15 में छुटकारे के पहले उल्लेख में था। इसलिए, ऑलेन ने सही ढंग से एक बाइबिल विषय को पुनर्जीवित किया है, और इसके लिए हम खुश हैं।

वह गलत तरीके से इसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश करता है और फादर्स, लूथर और बाइबल को बहुत सरल बना देता है। मैं इस पर यकीन नहीं कर सकता। वह सही ढंग से कहता है कि इब्रानियों 2:15 में प्रायश्चित के बारे में क्राइस्टस विक्टर का दृष्टिकोण सिखाया गया है।

बेटे ने अपने लिए मांस और खून लिया ताकि मृत्यु के माध्यम से वह शैतान को नष्ट कर सके और परमेश्वर के लोगों को छुड़ा सके। उस व्यक्ति को नष्ट करें जिसके पास मृत्यु की शक्ति है और ईसाइयों को मुक्त करें। यह सच है, लेकिन फिर यह कहना कि इब्रानियों के प्रायश्चित का मुख्य दृष्टिकोण क्राइस्टस विक्टर है, अजीब है।

मसीह के प्रायश्चित के बारे में इब्रानियों का मुख्य दृष्टिकोण बलिदान है। यह पूरे बाइबल में बलिदान के बारे में जानने का मुख्य स्थान है, विशेष रूप से बलिदान की पुराने नियम की पृष्ठभूमि के खिलाफ, जो शायद आंशिक रूप से अपने लूथरन विरासत और पुराने नियम को कम महत्व देने के कारण, ऑलेन पुराने नियम को अनदेखा करता है। तो, एक सहायक कार्य? ओह, हाँ।

और क्या उसने हमें कुछ सिखाया है? हाँ, हाँ। क्राइस्टस विक्टर उन लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, जिनमें विश्वासी भी शामिल हैं, जो विभिन्न चीजों के आदी हैं। मसीह हमारा चैंपियन है जिसने जीत हासिल की है।

वह एक ही व्यक्ति में ईश्वर और मनुष्य है जो अपने लोगों को स्वतंत्र करता है। यह सुसमाचार और ईसाई जीवन के लिए एक अद्भुत विषय है। बाद में, मैं कहूँगा कि मैं दंडात्मक प्रतिस्थापन में दृढ़ता से विश्वास करता हूँ, लेकिन यह मसीह के कार्य का एकमात्र बाइबिल दृष्टिकोण नहीं है।

और परमेश्वर ने हमें छह बड़ी तस्वीरें दी हैं। हमें उनसे परिचित होने की ज़रूरत है और फिर उन्हें उन लोगों की ज़रूरतों के अनुसार सुसमाचार प्रचार और शिष्यत्व के लिए उपकरण के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए जिनकी हम सेवा करते हैं। इसलिए, ऑलेन को बधाई, लेकिन साथ ही साथ उस व्यक्ति और उसके अच्छे काम की आलोचना भी।

एक और समकालीन धर्मशास्त्री वोल्फहार्ट पैननबर्ग हैं, 1928 से 2014 तक। मैं टोनी थिसलटन की आलोचना पर भरोसा कर रहा हूँ। पैननबर्ग ने मसीह के व्यक्तित्व और कार्य को सही ढंग से एक दूसरे से जोड़ा है, जिसके लिए उन्होंने अपने व्यवस्थित धर्मशास्त्र के दूसरे खंड में तीन व्यापक अध्याय या लगभग 200 पृष्ठ समर्पित किए हैं।

वह आरंभिक बिंदु से शुरू करते हैं, उद्धारण, केवल परमेश्वर ही इस घटना के पीछे हो सकता है। वह अपने बेटे को दुनिया में भेजकर है। गलातियों 4:4, रोमियों 8:3। लेकिन पैननबर्ग प्रायश्चित के अपने उपचार को केवल अपने व्यवस्थित धर्मशास्त्र के खंड एक, खंड दो तक सीमित नहीं रखते हैं।

उन्होंने अपनी पिछली पुस्तक, जीसस, गॉड, एंड मैं में इस पर विस्तृत चर्चा की है। क्रूस पर, उन्होंने घोषणा की कि यीशु ने एक प्रतिनिधि मृत्यु को प्राप्त किया, उद्धारण, इसे केवल हमारे लिए, हमारे पापों के लिए मरने के रूप में समझा जा सकता है। उनकी मृत्यु की प्रतिस्थापन प्रकृति न केवल मार्क 10:45 में देखी जाती है, यीशु ने कई लोगों के लिए छुड़ौती के रूप में अपना जीवन दिया, बल्कि 2 कुरिन्थियों 5:21 में भी, ताकि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन सकें।

गलातियों 3:13, मसीह ने हमारे लिए अभिशाप बनकर हमें व्यवस्था के अभिशाप से छुड़ाया। पैननबर्ग ने अपने गुरु बार्थ की तरह ही बाइबिल की व्याख्या के लिए बहुत प्रयास और ऊर्जा समर्पित की। पैननबर्ग ने लिखा, यीशु मसीह नया मनुष्य है, युगांतिक आदम, उद्धारण बंद करें।

लेकिन मसीह परमेश्वर का स्वयं-प्रकाशन भी है, जिसे पूरी तरह से उसके पुनरुत्थान के प्रकाश में देखा जा सकता है, और मैं यह भी कह सकता हूँ कि केवल उसके पुनरुत्थान के प्रकाश में। उनकी मृत्यु मानवीय पापों के लिए एक प्रायश्चित थी, जो पाप के अपराध, अपराध और परिणामों को दूर करती है। उन्हें आखिरी बार उद्धृत करते हुए, निर्दोष को मृत्यु की सजा भुगतनी पड़ी।

यह प्रतिनिधि दंडात्मक पीड़ा, पाप पर ईश्वर के क्रोध की प्रतिनिधि पीड़ा, उस संगति पर आधारित है जिसे यीशु मसीह ने हम सभी पापियों के साथ और हमारे भाग्य के साथ स्वीकार किया है। इसलिए पैननबर्ग में बहुत कुछ अच्छा है, और फिर भी मैं रॉबर्ट लेथम, इंजील सुधार धर्मशास्त्री द्वारा सावधान किया गया हूँ, जिन्होंने एक बहुत ही हालिया और बहुत ही उपयोगी व्यवस्थित धर्मशास्त्र लिखा है, और जिन्होंने मोल्टमैन और पैननबर्ग के दिमाग में दो सबसे महत्वपूर्ण प्रभावशाली, शायद, निश्चित रूप से जर्मन, और शायद आज जीवित सभी धर्मशास्त्रियों में से पूरी तरह से प्रभावशाली नाम लिए हैं, हालांकि अब पैननबर्ग का निधन हो चुका है। रॉबर्ट लेथम हमें सावधान करते हैं कि, क्या पैननबर्ग ने वास्तव में यीशु के पुनरुत्थान को स्वीकार किया था? इसका उत्तर हां है, और यह एक अधिक मुख्यधारा के धर्मशास्त्री के लिए उल्लेखनीय है, और फिर भी सब कुछ भविष्य से इतना जुड़ा हुआ है कि आपको यह विचार आता है कि, क्या ये बातें सच हैं और क्या ये घटित हुईं? हां, लेकिन वे केवल भविष्य में ही अंततः सच होंगी।

मेरा मतलब यह नहीं है कि भविष्य में अंततः साकार हो जाएगा। इसलिए फिर से, जैसा कि मैंने कल एमिल ब्रूनर की अच्छी शिक्षा के संदर्भ में पिछले व्याख्यान में कहा था, उनकी ज्ञानमीमांसा तिरछी है, और यह हमारे लिए समस्याएँ खड़ी करती है। ऐसा ही है, यह पैननबर्ग के साथ भी सच

है, मोल्टमैन के साथ और भी अधिक, लेकिन पैननबर्ग के साथ भी, कि बहुत कुछ अच्छा है, लेकिन हमें उसी समय सावधान रहना होगा।

हमने प्रायश्चित के सिद्धांत का इतिहास समाप्त कर लिया है। अब हम क्राइस्टोलॉजी के अध्ययन की ओर बढ़ते हैं। जैसा कि कई ऐतिहासिक हस्तियों ने जोर दिया है, मसीह का व्यक्तित्व और कार्य अविभाज्य हैं, और इसलिए, हालांकि यह पाठ्यक्रम काफी हद तक मसीह के कार्य पर आधारित है, हम उनके व्यक्तित्व को अनदेखा नहीं कर सकते। इतना ही नहीं, हमें कम से कम तैयारी के तौर पर उनके व्यक्तित्व के बारे में जानबूझकर सोचना चाहिए।

यह अभी भी परिचय के साथ काम कर रहा है। वास्तव में, मसीह के उद्धारक कार्य पर पहुँचने से पहले परिचय पर अंतिम बिंदु। क्राइस्टोलॉजी।

मुझे तीन बातें कहनी हैं। मसीह का व्यक्तित्व और कार्य अविभाज्य हैं। मैं मसीह के उद्धारक कार्य और त्रिएकत्व तथा उसके बाद महत्वपूर्ण दो-राज्य सिद्धांत के बारे में सोचना चाहता हूँ।

सबसे पहले, मसीह का व्यक्तित्व और कार्य अविभाज्य हैं। नए नियम के क्लासिक अंश मसीह के व्यक्तित्व और कार्य दोनों के बारे में सिखाते हैं। उदाहरण के लिए, फिलिप्पियों 2।

इससे ज़्यादा क्लासिक पाना मुश्किल है। फिलिप्पियों 2 हमें मसीह के उद्धारक कार्य के बारे में बताता है कि उसने मृत्यु, यहाँ तक कि क्रूस पर मृत्यु, यहाँ तक कि क्रूस पर मृत्यु तक आज्ञाकारी बनकर खुद को दीन बनाया। यही मसीह का कार्य है, और फिर भी, ध्यान दें कि यह अंश कैसे शुरू होता है।

मसीह यीशु में जो मन है, वही मन तुम में भी रखो। परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा, परन्तु दास का स्वरूप धारण करके अपने आप को शून्य कर दिया, और मनुष्यों की समानता में जन्म लिया। और फिर यह कहा गया है, परिवर्तन, और मनुष्य के रूप में पाया गया, उसने क्रूस की मृत्यु तक आज्ञाकारी बनकर अपने आप को दीन किया। परमेश्वर की योजना में और इतिहास में परमेश्वर की योजना के प्रकाशन में मसीह का व्यक्तित्व और कार्य अविभाज्य हैं।

यह केवल इसलिए है क्योंकि मसीह वही है जो वह है, इसलिए वह अपना उद्धार कार्य कर सकता है, और उसके आने और अपनी पहचान प्रकट करने का उद्देश्य उसके मिशन, उसके क्रूस और पुनरुत्थान के लिए है। यह हर क्लासिक मार्ग में एक जैसा है। कुलुस्सियों 1 में, हम मसीह के मेल-मिलाप के महान कार्य के बारे में पढ़ते हैं।

उसके द्वारा, परमेश्वर प्रसन्न हुआ, कुलुस्सियों 1:20, कि सब वस्तुओं का अपने साथ मेल कर ले। और आप, कुलुस्सियों के विश्वासियों, उसने अब अपनी मृत्यु के द्वारा अपने शरीर में मेल कर लिया है, जैसा कि अंश आगे बताता है। लेकिन अपने कार्य के बारे में बात करने से पहले, पौलुस अपने कार्य के लिए आवश्यकताओं और पूर्वापेक्षाओं के बारे में बात करता है।

वह अदृश्य परमेश्वर की छवि है, ज्येष्ठ, सर्वोच्च, सभी सृष्टि में श्रेष्ठ, वारिस। और इससे पहले कि यह कहा जाए, परमेश्वर उसके द्वारा सब बातों का मेल कराने के लिए प्रसन्न हुआ, यह कहता है, क्योंकि परमेश्वर की सारी परिपूर्णता उसमें वास करने के लिए प्रसन्न हुई, और उसके द्वारा सब बातों का मेल कराने के लिए। प्रेरित मसीह के कार्य के बारे में उसकी पहचान के बारे में बात किए बिना नहीं बोल सकते।

और यह इब्रानियों अध्याय 1, तीसरे क्लासिक अंश के लिए भी वही है। इब्रानियों 1 और 2 पुत्र के बारे में बात करते हैं, जो 1 और 3, फिर, परमेश्वर की महिमा की चमक है। और मैंने लोगों को यह कहते सुना है कि नया नियम मसीह के बारे में बात करने के लिए कभी भी प्रकृति शब्द का उपयोग नहीं करता है।

यह गलत है। पुत्र परमेश्वर की महिमा की चमक है, और उसकी प्रकृति की सटीक छाप हाइपोस्टैसिस शब्द है। इसका अर्थ है प्रकृति, आवश्यक अस्तित्व, सार।

इसका अर्थ है स्वभाव। इसलिए उसके व्यक्तित्व के बारे में ये बातें कहने के बाद, यह कहता है कि उसने पापों के लिए शुद्धिकरण किया, इब्रानियों की पुस्तक में अध्याय 9 और 10 में महान प्रायश्चित की आशा की। यह बहुत स्पष्ट है: मसीह का व्यक्तित्व और कार्य अविभाज्य हैं।

मसीह के व्यक्तित्व के बारे में रूढ़िवादी दृष्टिकोण उसके प्रायश्चित की रूढ़िवादी समझ के लिए आवश्यक है, और इसके परिणामस्वरूप, उसके व्यक्तित्व के बारे में दोषपूर्ण समझ अनिवार्य रूप से उसके उद्धार कार्य के बारे में दोषपूर्ण दृष्टिकोण की ओर ले जाती है। और यही कारण है कि पंथवादी खुद को बचाने की कोशिश करने के लिए दरवाजे खटखटाते हैं या अन्य अच्छे काम करते हैं। वे ऑटोसोटेरिज्म के एक कार्यक्रम में समाप्त होते हैं, जो किसी के उद्धार के लिए काम करता है, क्योंकि वे यीशु के ईश्वरत्व को अस्वीकार करते हैं और इसलिए, उद्धार के लिए खुद को और केवल उस पर डालने में असमर्थ हैं।

उन्हें अपने उद्धार में योगदान देना चाहिए, इसलिए वे खुद ही सोचते हैं। यह बिंदु उस अनुशासन पर छाया डालता है जिसके लिए मैंने अपना जीवन समर्पित किया है क्योंकि व्यवस्थित धर्मशास्त्र, हालांकि इसमें कई ताकतें हैं, लेकिन इसमें कई कमजोरियाँ भी हैं। व्यवस्थित विज्ञान के बारे में एक कृत्रिमता है।

ओह, ताकत और कमजोरियाँ आपस में जुड़ी हुई हैं। मैं संभवतः, संभवतः, वहाँ शब्द है, मैं संभवतः मसीह के व्यक्तित्व की सभी सच्चाइयों को कैसे एक साथ रख सकता हूँ, और फिर उसके सभी उद्धारक कर्मों को, और सभी बाइबिल चित्रों को? मैं बस, मेरा दिमाग एक उलझन होगा। इसलिए, हम उसके व्यक्तित्व को अलग करते हैं, और उसके पूर्व-अस्तित्व, अवतार, उसके देवता, उसकी मानवता, उसकी एकरूपता, उसकी दो अवस्थाओं, और इसी तरह का अध्ययन करते हैं।

और उस समझ के साथ, फिर हम उसके काम का अध्ययन करते हैं, उसने क्या किया, हम में से एक बन गया, एक पाप रहित जीवन जिया, हमारे स्थान पर मर गया, फिर से जी उठा, पिता के

पास चढ़ गया, उसके दाहिने हाथ पर बैठा, पवित्र आत्मा को उंडेला, हमारे लिए मध्यस्थता की, और वह फिर से आया। यह सब उसका उद्धार करने वाला काम है, और यह सब उसका व्यक्तित्व है। इसलिए, व्यवस्थित धर्मशास्त्र सही ढंग से उन भागों को अलग करता है जिन्हें परमेश्वर ने बेहतर ढंग से समझने के लिए एक साथ रखा है।

लेकिन यह बनावटी है। अगर हम वहीं रहेंगे, तो यह अच्छा नहीं होगा। हमें चीजों को फिर से जोड़ना होगा, नहीं तो हम उन चीजों को तोड़ देंगे जिन्हें भगवान ने हमेशा के लिए जोड़ दिया है।

यह सही नहीं है। इसलिए व्यवस्थित विज्ञान एक सहायक उपकरण है, खासकर अगर हम उचित धार्मिक तरीकों का पालन करते हैं, यानी व्याख्या से शुरू करके, बाइबिल धर्मशास्त्र तक जाते हुए, ऐतिहासिक धर्मशास्त्र को शामिल करते हुए, और फिर सावधानीपूर्वक, सावधानी से, व्याख्यात्मक रूप से और अस्थायी रूप से व्यवस्थित विज्ञान तक पहुँचते हैं। मसीह का व्यक्तित्व और कार्य शास्त्र में अविभाज्य हैं, और उन्हें हमारी सोच में भी अविभाज्य होना चाहिए।

तो, यह घटनाओं और मसीह के उद्धारक कार्य से संबंधित चित्रों के हमारे अध्ययन को कैसे प्रभावित करेगा? हम हमेशा उसके व्यक्तित्व पर नज़र रखेंगे। यह कठिन नहीं है। अंश दोनों से भरे हुए हैं।

लेकिन यह एक अच्छा अनुस्मारक है, जैसा कि संत एन्सेलम ने हमें पहले ही बताया है, कि हमें यह समझने की ज़रूरत है कि यीशु कौन है, ताकि हम उसके द्वारा हमारे लिए किए गए कामों की सराहना कर सकें। इसका एक महत्वपूर्ण पहलू। इसके बारे में सोचना एक अजीब बात है।

एक ऐसा धर्म जिसका मुख्य आकर्षण उसके संस्थापक की मृत्यु है। मैं इसे स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूँ। एक यहूदी को सूली पर चढ़ाए जाने से आप सभी उत्साहित हैं? हाँ।

बेशक, मैं इस तरह की बातें करके बहुत सरल हो रहा हूँ। लेकिन यह सच है। प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु, उनके पुनरुत्थान से अविभाज्य है, मैं यह कहने से खुद को नहीं रोक सकता, एक व्यवस्थित व्यक्ति होने के नाते, यह मेरे खून में है।

यही केंद्र है। क्या? यह जीत नहीं है। यह हार है। ऐसा लगता है।

और क्रूस में बहुत बड़ा रहस्य है। जब मैं इस सप्ताह 20 घंटे तक इसके बारे में बात कर लूँगा, तो आप इसे और बेहतर तरीके से समझ जाएँगे। लेकिन गुमराह मत होइए।

आप गहराई तक नहीं जा पाएँगे, और आप पूरी तरह से समझ नहीं पाएँगे। क्योंकि समस्या यहीं है। यह वास्तव में रहस्यमय है कि ईश्वर-मनुष्य की मृत्यु सभी युगों के ईश्वर के सभी लोगों के पापों का प्रायश्चित्त कैसे कर सकती है।

पुराने नियम के लाखों बलिदानों को रोक दें। हमेशा के लिए एक बलिदान उन सभी को बचाता है जो कभी विश्वास करेंगे। मुझे पता है कि यह दो बार है, लेकिन यह जोर देने के लिए था।

यह कैसे हो सकता है? जिस तरह से मैं कहता हूँ, अवतार का रहस्य क्रूस को अपना रहस्य देता है। आप मुझे ईश्वर-मनुष्य की पहचान पूरी तरह से समझाएँ। आप उसे पूरी तरह से समझाएँ, और मैं आपको क्रूस के बारे में पूरी तरह से समझाऊँगा।

आप दोनों में से कुछ भी नहीं कर सकते। यह एक महान रहस्य है कि भगवान हम में से एक बन जाता है। चरनी में बच्चा सर्वशक्तिमान ईश्वर है।

वह मेरी के गर्भ में पल रहा बच्चा है, ईश्वर का भ्रूण है। बच्चा ईश्वर का शिशु है, ईश्वर का बच्चा है, ईश्वर का छोटा लड़का है, और अगला बच्चा तो बस मेरे पिंजरे को हिलाता है, ईश्वर का किशोर। हे प्रभु, हमारी मदद करो।

मैं बस मज़ाक करने की कोशिश कर रहा हूँ। और मैं एक बार किशोर था, मानो या न मानो, लगभग 200 साल पहले, मेरे पोते-पोतियाँ कहते हैं। नहीं, वह ईश्वर-मनुष्य है जिसने हमसे प्यार किया और हमारे लिए खुद को दे दिया।

अवतार में रहस्य छिपा है। ईसाई धर्म के दो महान रहस्य हैं कि कैसे ईश्वर एक में तीन हैं और कैसे ईश्वर मनुष्य बन गए। वे दोनों ही महत्वपूर्ण हैं।

वे दोनों ही बातें बाइबल में प्रकट की गई हैं। यहीं से सच्चे रहस्य सामने आते हैं, परमेश्वर का अपना आत्म-प्रकटीकरण। और फिर भी, हम पूरी तरह से समझ नहीं पाते कि वह एक ही व्यक्ति में परमेश्वर और मनुष्य कैसे है।

ओह, हम इसे स्वीकार करते हैं, हम इस पर विश्वास करते हैं, हम कुछ स्पष्टीकरण देते हैं, और हम गलतियों को बाहर निकालते हैं। हम यही करते हैं। और यही बात क्रॉस के साथ भी लागू होती है।

हम नौ घटनाओं का पता लगाते हैं, मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान पर जोर देते हैं। हम बाइबिल के चित्रों, छह बड़े चित्रों के साथ काम करते हैं, और हम त्रुटियों को बाहर निकालते हैं। हमने अपने ऐतिहासिक धर्मशास्त्र सर्वेक्षण के दौरान बहुत कुछ किया।

लेकिन अंत में, सेंट ऑगस्टीन ने ठीक ही कहा, हम एक जगह तक समझते हैं, और फिर हम पूजा करते हैं। मेरी अपनी सीमित समझ में, यह इस धर्म की सच्चाई का सबूत है। किसी भी ईसान ने त्रिदेवों का सिद्धांत नहीं बनाया।

यह उन दो चीजों में से एक थी जिसका उपयोग प्रभु ने मुझे 21 वर्षीय के रूप में अपने पास लाने के लिए किया। दूसरी थी ईश्वर की ईमानदारी, ईश्वर की स्पष्टवादिता, 1 कुरिन्थियों 15 में, यह कहते हुए कि, यदि मसीह मृतकों में से जीवित न होते तो क्या प्राप्त होता? मैंने कहा, यह अविश्वसनीय है। यह अद्भुत है।

और हां, फिर अगली आयत, आयत 20 में, कहती है, लेकिन अब मसीह मरे हुआओं में से जी उठा है, जो विश्वास करने वालों में पहला फल है। वैसे भी, मसीह-विज्ञान प्रायश्चित के सिद्धांत के लिए आवश्यक है। नंबर एक, मसीह का व्यक्तित्व और कार्य अविभाज्य हैं।

दूसरा, मसीह के उद्धार कार्य को त्रिएकत्व के प्रकाश में समझना चाहिए। यहाँ हम दो रहस्यों को एक साथ रख रहे हैं। ओह-ओह।

इस बिंदु पर त्रिदेव और अवतार एक दूसरे को चूमते हैं। त्रिदेव का सिद्धांत, वास्तव में सरल शब्दों में, कहता है कि ईश्वर एक है। ईश्वर हमेशा से एक ईश्वर के रूप में अस्तित्व में रहा है।

हम इसे व्यवस्थाविवरण 6.4 में देखते हैं। हम इसे याकूब अध्याय 2, 1 तीमुथियुस 2.5 में देखते हैं। एक ईश्वर है। त्रिएकत्व के सिद्धांत में दूसरा कथन यह है कि यह एक ईश्वर तीन रूपों में, तीन तरीकों से, तीन व्यक्तियों के रूप में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में अनंत काल से विद्यमान है। तीन ईश्वर नहीं, एक ईश्वर, तीन व्यक्तियों में अनंत काल से विद्यमान है।

तीसरा कथन यह है कि इन तीनों को कभी अलग नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि ईश्वर एक है। लेकिन उन्हें अलग-अलग किया जाना चाहिए। ठीक है? चौथा, जिसके बारे में हम वास्तव में बात नहीं करेंगे, वह यह है कि, पवित्रशास्त्र इन तीनों को एकता और समानता में एक साथ मानता है।

पाँचवाँ बिंदु यह होगा कि वे परस्पर एक दूसरे में समाहित हैं, और अब हम उस गहराई से बहुत आगे निकल चुके हैं जिसके बारे में हमें सोचने की ज़रूरत है। मैं इस बिंदु पर विस्तार से बात करना चाहता हूँ। तीनों व्यक्ति अलग-अलग हैं लेकिन कभी अलग नहीं हुए।

पिता ने देहधारण नहीं किया। पवित्र आत्मा ने देहधारण नहीं किया। केवल पुत्र ने देहधारण किया।

क्या तुम मेरे साथ हो? इसलिए, पिता नहीं मरा। वास्तव में, यह एक प्रारंभिक चर्च की झूठी शिक्षा थी जिसे पैट्रिपेशनिज्म कहा जाता है। पैट्रिपेशनिज्म, पिता जो कुछ लोगों ने सिखाया कि पिता क्रूस पर मर गया।

नहीं, पिता क्रूस पर नहीं मरा। और पवित्र आत्मा क्रूस पर नहीं मर सकता क्योंकि वह एक आत्मा है। केवल पुत्र ही देहधारी हुआ।

इसलिए केवल पुत्र ही प्रायश्चित कर सकता है और फिर से जी उठ सकता है। हम व्यक्तियों में अंतर करते हैं। लेकिन यहीं पर समस्या आती है।

और यहाँ मसीह के कार्य पर चमकने वाला त्रिएकत्व का रहस्य आता है। हम व्यक्तियों में अंतर करते हैं, ठीक है? यीशु के बपतिस्मा के समय, यीशु पानी से बाहर आए। पिता स्वर्ग से बोलते हैं।

और यहाँ एक दृश्य, एक ईश्वरीय दर्शन, कबूतर के रूप में अदृश्य आत्मा का एक दृश्य प्रकटीकरण है। तीन व्यक्ति, एक ईश्वर। अलग-अलग लेकिन अविभाज्य।

इसका मतलब यह है कि हालाँकि मसीह का कार्य केवल मसीह द्वारा ही किया गया था, फिर भी ऐसा लगता है कि यह त्रिएक का कार्य है। अब, मैं बाइबल के कुछ अंशों की ओर इशारा करने जा रहा हूँ जो आपको सिखाते हैं कि यह पिता और आत्मा का कार्य है। लेकिन एक व्यवस्थित धर्मशास्त्री के रूप में, मैं आपके साथ अपनी खुद की समझ साझा करूँगा कि चीजें कैसे काम करती हैं और व्यवस्थित विधि क्या है।

अगर मेरे पास कोई मार्ग नहीं होता, तो ठीक है, नंबर एक मैं कहूँगा, मेरे पास कोई मार्ग नहीं है, ठीक है? यह मेरे लिए एक महत्वपूर्ण बिंदु है। धर्मशास्त्र को व्याख्या पर आधारित होना चाहिए। और यह व्याख्या से परे कदम उठा सकता है, लेकिन उन्हें सावधानीपूर्वक ऐसे कदमों के रूप में लेबल किया जाना चाहिए क्योंकि उन्हें अधिक आसानी से सुधारा या बदला जा सकता है, और उन्हें इस तरह से माना जाना चाहिए, जैसा कि आप चाहें, वास्तव में पवित्रशास्त्र के शब्दों पर आधारित शिक्षा की तुलना में दूसरे क्रम का है।

मेरे साथ? लेकिन मेरे पास शास्त्र है। इसलिए, अगर मेरे पास कोई शास्त्र नहीं होता, तो मैं कहता, बाइबल कभी नहीं कहती कि पिता या आत्मा प्रायश्चित में शामिल थे। यह केवल पुत्र के बारे में कहता है।

बेशक, यह केवल यही कहता है कि पुत्र मर गया। इतना ही नहीं, यह भी नहीं कहता कि वे इसमें शामिल थे। लेकिन चूँकि त्रिदेव के व्यक्ति अविभाज्य हैं, इसलिए वे इसमें शामिल थे।

और एक भावना यह है कि प्रायश्चित का कार्य त्रिदेव का कार्य था, ठीक है? लेकिन मैं आपको दिखा दूँ कि, वास्तव में, मसीह का कार्य त्रिदेव का कार्य है। मसीह का कार्य परमेश्वर पिता का कार्य है। अब, मेरी बात को गलत मत समझिए।

मैं व्यक्तियों को भ्रमित नहीं कर रहा हूँ। मैं पिता को क्रूस पर नहीं चढ़ा रहा हूँ। क्रूस पर जो था वह पुत्र था।

और क्रूस पर किया गया कार्य पुत्र का कार्य था। लेकिन यह पिता का कार्य भी है। 2 कुरिन्थियों 5:18 और 19.

यह सब परमेश्वर की ओर से है, जिसने मसीह के द्वारा हमें परमेश्वर से मेलमिलाप कराया और हमें मेलमिलाप की सेवकाई दी। अर्थात्, मसीह में परमेश्वर संसार को अपने साथ मेलमिलाप करा रहा था, उनके अपराधों को उनके विरुद्ध नहीं गिना रहा था और मेलमिलाप का संदेश हमें सौंप रहा था। केवल यीशु ने क्रूस पर मेलमिलाप कराया।

केवल उसे इफिसियों 2 कहा जाता है, शांतिदूत जो परमेश्वर को हमारे साथ मिलाने के लिए मरता है, और एक प्रतिवर्ती क्रिया द्वारा, हमें परमेश्वर के साथ जोड़ता है, ठीक है? लेकिन उसका मेलमिलाप का कार्य भी पिता का कार्य है। हम पिता को क्रूस पर नहीं चढ़ा रहे हैं। हम केवल त्रिदेवों के व्यक्तियों के बारे में कह रहे हैं; चूँकि एक परमेश्वर है, इसलिए ये व्यक्ति अविभाज्य हैं।

मसीह के मेलमिलाप के अनूठे कार्य में यह भी शामिल है: परमेश्वर मसीह में था, और संसार को अपने साथ मेलमिलाप करा रहा था। इतना ही नहीं, बल्कि इब्रानियों 9:13, 14 इस प्रायश्चित्त कार्य में आत्मा को लाता है। और आत्मा कभी देहधारी नहीं हुई।

आत्मा मर नहीं सकती। और मसीह का काम मसीह का काम है। लेकिन इब्रानियों के लेखक ने इसे इस तरह से कहा है।

इब्रानियों 9:13 और 14. क्योंकि यदि बकरों और बैलों का लहू और अशुद्ध लोगों पर बछिया की राख छिड़कने से शरीर की शुद्धि होती है, तो मसीह का लहू, जो पिता या आत्मा का नहीं है, क्योंकि उनके पास लहू नहीं है, कितना अधिक पवित्र होगा? क्या मसीह का लहू, मसीह की हिंसक मृत्यु, मसीह का लहू जिसने सनातन आत्मा के द्वारा अपने आप को निर्दोष रूप से परमेश्वर को अर्पित किया, कितना अधिक पवित्र होगा, उसका लहू हमारे विवेक को मरे हुए कामों से शुद्ध करेगा ताकि हम जीवित परमेश्वर की सेवा करें? मसीह अकेला ही एक पुजारी और बलिदान था, और उसने अपने आप को परमेश्वर को अर्पित किया; उसने अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर को निर्दोष रूप से अर्पित किया। मैं कम से कम एक महान टिप्पणीकार, फिलिप एजकॉम्बे ह्यूजेस को जानता हूँ, जो मसीह के दिव्य स्वभाव का उल्लेख करते हुए छोटे शब्द का अनुवाद करेगा।

मैं इससे सहमत नहीं हूँ। मैं विलियम लेन, इब्रानियों पर मेरे पसंदीदा टिप्पणीकार, और लगभग सभी अन्य लोगों से सहमत हूँ, कि इसे बड़े अक्षर S में लिखा जाना चाहिए। इसलिए मैं वहाँ अलग व्याख्या को स्वीकार कर रहा हूँ, लेकिन इसका अर्थ यह है कि मसीह ने खुद को ईश्वर को अर्पित कर दिया। मसीह अकेले ही मरे, लेकिन यह पवित्र आत्मा के माध्यम से हुआ।

पवित्र आत्मा मसीह के प्रायश्चित्त में शामिल है। यह बाइबल में एकमात्र श्लोक है जो ऐसा कहता है। अर्थात्, मसीह का कार्य मसीह का कार्य है।

लेकिन ऐसा इसलिए भी है क्योंकि व्यक्ति अविभाज्य हैं, यह पिता का कार्य है। और यह आत्मा के माध्यम से है कि मसीह ने खुद को परमेश्वर को अर्पित किया, और इसलिए विलियम लेन ने अपनी इब्रानियों की टिप्पणी में कहा है कि इसका मतलब है कि यह बलिदान पूर्ण है। यह सभी बलिदानों का अंत है।

यह वास्तव में इस बलिदान से सैकड़ों साल पहले किए गए बलिदानों को अपनी प्रभावकारिता देता है। यह निरपेक्ष है। यह ईश्वर-मनुष्य द्वारा पिता की इच्छा से ईश्वर, पवित्र आत्मा के माध्यम से बनाया गया था।

इस प्रकार, यह एक तरह से त्रिदेव का कार्य बन जाता है। मुझे लगता है कि हमें इसे समाप्त कर देना चाहिए। थोड़े अंतराल के बाद, हम आएंगे, हम निपटेंगे, और अगले घंटे में, हम दो राज्यों के सिद्धांत से शुरू करेंगे और फिर मसीह के तीन कार्यालयों की ओर बढ़ेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा मसीह के उद्धार कार्य पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 5, परिचय, भाग 5, सिद्धांत और क्राइस्टोलॉजी का इतिहास है।